

und Regel, auf entscheidende Weise AV. 16, 114, 1. 2. स्तमेमोष पया स-
माव्रत्स (समावृत्) उपैष्यामि stelle eine Ordnung fest, dass du ihnen
gleichmässig beiwohnen wollst TS. 2, 3, 5, 1. पुत्राहि पूं सवितापसा र-
द्रनृताय चित्रं घृतवत्तमिष्यति RV. 1, 34, 10. वर्वति चक्रं परि व्यामृतस्य
ein Rad der festen Ordnung d. h. ein regelmässig sich bewegendes 164,
11. — b) die Ordnung in heiligen Dingen: heiliger Brauch, Satzung,
frommes Werk; göttliches Gesetz, Glaube als Inbegriff der religiösen
Wahrheiten: तन्म स्तं पातु शतशारदाय RV. 7, 101, 6. आ न स्ते शिषाहि
विश्वमूलिनाम् 16, 6. स्ता यंतामि मल्लना वि पद्मः 6, 13, 14. 7, 39, 1. मा शि-
भ्रदेवा अयि गुरुते नः 21, 5. स्तस्य धीर्धितं ब्रह्मणो मनीषाम् 9, 97, 34, 37.
102, 1. 8. स्तस्य हि धारुधः सति पूर्वस्ति स्य धीतिर्विज्ञानानि कृति । स्त-
तस्य श्रौता वाधिरा ततद् कर्णा बुधानः प्रचनान् श्रयोः 4, 23, 8. 9. 10. देवा
भुवन्नवेदा म स्तानाम् 4. स्तस्य मा प्रदिशो वर्धयति 8, 89, 4. 5. 9, 70, 1. 10,
110, 11. स्त आ ज्ञातमग्निम् 6, 7, 1. स्तेनाभिन्दस्परिवत्सरे वलम् 10, 62, 2.
स्तस्त् योगे वि व्येधमूधः 30, 11. 3, 27, 11. 10, 61, 14. 73, 5. वेधा स्तस्य
86, 10. स्तानि दीयत् 122, 6. 138, 1. 179, 3. 4, 56, 6. 7. 5, 12, 6. स्तस्य म-
नेसा 4, 2, 3. AV. 10, 7, 1. 11. 29. 30. 10, 33. VS. 3, 33. 6, 8. Besonders häu-
fige Verbindungen des Wortes sind folgende: a) स्तं वृकृत् RV. 1, 73, 5.
131, 4. 3, 2, 8. 4, 10, 2. 5, 66, 5. 6, 13, 2. 9, 36, 1. 66, 24. 107, 15. 108, 5. मरु
स्तस्य 6, 49, 15. 7, 64, 2. 10, 8, 5. 2, 23, 17. Personifiziert स्तं मरुत् 10, 66,
4. — b) स्तस्य गर्भिः, प्रजाः von Agni: यमापो अद्वयो वना गर्भितस्य पि-
प्रति RV. 6, 48, 5. 8, 6, 2. Soma 9, 68, 5. Vishnu 1, 136, 3. — c) प्रथमज्ञा
स्तस्य (vgl. प्रथमज्ञा स्तेनं RV. 10, 109, 1): अग्निर्ह नः प्रथमज्ञा स्तस्य RV.
10, 3, 7. द्विज्ञा अहं प्रथमज्ञा स्तस्येदं धेनुर्दुक्कृतायमाना 61, 19. 4, 164, 37.
VS. 32, 11. Pragāpati AV. 4, 33, 1. 12, 1, 64. — 6, 122, 1. 8, 9, 16, 21.
TAIT. UP. 3, 10, 6. — d) स्तस्य सदनम्, सदेः, सन्नं, योनिः, पद्मं, नाभिः,
nicht nur vom Mittelpunkt des Glaubens und Cultus im Diesseits, dem
Altar und ähnlichen Begriffen, sondern auch vom Allerheiligsten im
Jenseits gebraucht. स्तस्य योनिः ist NIGH. 1, 12 unter den Namen für
उदक aufgezählt. प्र ब्रह्मेतु सदनदृतस्य वि रश्मिभिः ससृजे सृगो गाः RV.
7, 36, 1. प्र पूर्वते पितरा नव्यमोभिर्गोभिः कृणुधं सदेन स्तस्य 53, 2. सोमा
अमृमिन्दवः सुता स्तस्य सदेन 9, 12, 1. 4, 84, 4. परावर्तो वा सदनदृतस्य
(आ दातिन्द्रः) 4, 21, 3. 2, 34, 13. धार्यं दिवं सदेन स्तस्य 4, 42, 4. 10, 100,
10. VALARH. 9, 4. स्तस्य देवीः सदेसा बुधाना गवो न सर्गी उपेतो जरते 4,
51, 8. 3, 7, 2. 5, 41, 1. 10, 111, 2. स्तस्य ते सदेसी अतः 3, 33, 12. स्तस्य
सन्नं वि चरामि विद्वान् 14. स्तस्य योनावशयद्मूनाः 3, 11, 34, 6. 4, 1, 12.
सोमो विगाति गातुविदेवानामेति विष्कृतम् । स्तस्य योनिनासदनम् 3, 62,
13, 18. 5, 21, 4. 6, 16, 37. 9, 8, 3 und oft. 10, 63, 7. 8. आप्रपायन्मधुन स्त-
स्य योनिम् 68, 4. स्तस्य योनी सुकृतस्य लोके ऽरिष्टा वा मरु पत्या दधा-
मि 83, 24. VS. 2, 6. 12, 105. 29, 6. स्तस्य नाभावधि से पुनामि 10, 13, 3. 9,
74, 4. चतुःशक्तिर्नाभिस्तस्य सप्रयोः VS. 38, 19. Vgl. auch स्तस्य सानुः
RV. 10, 123, 2. 3. — e) स्तस्य धामं. यास्ते प्रजा अमृतस्य परस्मिन्धानवृत्त-
स्य RV. 1, 43, 9. स्तस्य योपा न मिनाति धामं 123, 9. यस्ते अस्य सव्यं
वयंश्च नमस्विनः स्व स्तस्य धामेन 7, 36, 5. स्तस्य धामं वि मिमे पुत्राणि
10, 124, 3. — f) स्तस्य धाराः आ यः ससाद् धारामृतस्य RV. 1, 67, 7 (4). स्त-
तस्य धाराः सुदुयो दुहानाः 7, 43, 4 (10, 43, 9). 8, 6, 8. 9, 33, 2. (अमृम) सोमा
स्तस्य धारया 63, 4. 14, 21. 5, 12, 2. Vgl. स्तस्य धेनुवः 1, 73, 6 (गोः
84, 16). देहानाः 144, 2. 9, 73, 3. 77, 1. पयः 1, 79, 3. 3, 53, 13 (8, 84, 5. 6,

19). — g) स्तस्य गोपाः, नेता, रथोः, पतिः u. s. w. von Agni, Soma,
den Āditja und andern Göttern, zuweilen auch von menschlichen
Wächtern der heiligen Ordnung. RV. 1, 4, 8. 3, 10, 2. 10, 118, 7. स्तस्य
गोपावधि तिष्ठथो रथम् 5, 63, 1. 6, 31, 3. 7, 64, 2. गोपामृतस्य विमरुत् 9,
45, 4. 73, 8. पुरुवीरं मरु स्तस्य गोपाम् 6, 49, 15. अत्रा ते भद्रा रथना अ-
पश्यमृतस्य वा अभिरन्तति गोपाः 1, 163, 5. रथीस्तस्य वृक्तो विचर्षणिर्-
ग्निः 3, 2, 8. 4, 10, 2. स्तस्य वा रथ्यः पूतदत्तानृतस्य पस्त्यमदेः अद्वयान् 6,
51, 9. 53, 1. 7, 66, 12. 8, 72, 3. Agni heisst स्तस्य धूपत् 1, 143, 7. A diti
स्तस्य पत्नी VS. 21, 5. पतयः RV. 4, 37, 2. मातरा heissen Himmel und
Erde, Nacht und Morgen 1, 142, 7. 5, 5, 6. 6, 17, 7. 10, 58, 8. (9, 102, 7).
pl. 9, 33, 5. — c) das Rechte, Wahre; Recht, Wahrheit, besonders die
religiöse Wahrheit, = सत्य NIGH. 3, 10. AK. 1, 1, 5, 22. 3, 4, 14, 80. TRIK.
3, 3, 152. H. 264. an. 2, 159. MED. t. 6. साकं देविभिरवेददत्तानि RV. 1, 179,
2. 161, 9. स्तस्य देवा अन्तु व्रता गुः 63, 3 (2). 103, 5. 139, 2. स्तादिपर्मिते
धिपे मनोयुजं aus aufrichtigem Herzen 8, 13, 26. दशहं प्राचोस्तदन्तं व-
दामि 10, 34, 12. 3, 4, 7. स्ता वदतो अन्तं रपेम 10, 10, 4. स्तेनादित्यास्ति-
ष्ठति 83, 1. स्तेनं मित्रावरुणा सचेये 1, 132, 1. 3. स्तं च सत्यं च 10, 190,
1. AV. 9, 3, 21. सत्यं वृकृतममृम 12, 1, 1. VS. 11, 47. AV. 7, 1, 1. TS.
3, 2, 7. 1. CAT. Br. 11, 2, 7, 9. 13, 3, 18. KAUC. 90. स्तसत्ये CAT. Br. 11,
2, 7, 9. तामेव प्रत्यतं ब्रह्म वदिष्यामि । स्तं व । सत्यं व । TAIT. UP. 4,
1. 9. पृथ्या oder पन्था स्तस्य der rechte Weg, sowohl eigentlich als vom
rechtschaffenen Wandel: स्तस्य पन्था मरुता विद्वान् RV. 5, 43, 8. (उपाः)
स्तस्य पन्थामन्वेति साधु 4, 124, 3. रुद्राग्नी अयं सत्ययुष प्र पति धीतयः ।
स्तस्य पृथ्या अन्तु ॥ 3, 12, 7. विश्वामिन्दस्त्वयामृतस्य 31, 5. 7, 44, 5. 9,
7, 1. स्तस्य मित्रा वरुणा पन्था वामयो न नावा इरिता तरेम 7, 63, 3. स्त-
तस्य पन्था न तरति दुष्कृतः 9, 73, 6. 8, 31, 13. 10, 133, 6. VS. 6, 12, 7.
45. AV. 8, 9, 13. NIA. 8, 19. — स (वामुदेवः) हि सत्यमन्तं चैव पवित्रं पुण्य-
मेव च MBH. 1, 249. आद्यं पुरुषमीशानं पुरुहन्तं पुरुष्टतम् । स्तम् (kann
auch adj. sein) एकान्तं ब्रह्म व्यक्ताव्यक्तं सनातनम् ॥ 22. द्विज्ञातीनामन्तं
धर्मो लोकेश्वैकवर्णिकः 3, 11298. आयुष्य, यशस्य, श्री, स्त M. 2, 52. स्ता-
नूते 1, 29. स्तं ब्रूयान् चानृतम् R. 5, 34, 19. M. 8, 61. PAKSAT. III, 4, 110. स्त-
तिक्ति M. 8, 104. Die Wahrheit personif. als ein Kind Dharma's VP.
53, N. 13. Bildlich wird M. 4, 4. 5 das Aehrenlesen, als der wahre Le-
bensunterhalt eines Brahmanen, स्त genannt im Gegens. zum Ackerbau,
welcher bildlich अन्त Unwahrheit genannt wird. Daher स्त = उच्छ-
शिल AK. 2, 9, 2. TRIK. 3, 3, 152. H. 866. an. 2, 159. MED. t. 5. — d) Nach
NIGH. 1, 12. H. an. und MED. = उदक Wasser; ebenso im NIA. und bei
den Commentatoren sehr häufig, auch in den comp. mit स्त. Diese
Bedeutung wird aber aus den richtig verstandenen Texten schwerlich
nachzuweisen, noch mit den anerkannten Bedeutungen des Wortes ir-
gendwie zu vereinigen sein. — e) = धन NIGH. 2, 10 nur in der einen
Recension. — Auffallenderweise wird स्त unter den Bezeichnungen für
यस NIGH. 3, 17 nicht aufgezählt, während es von den Commentatoren
als synonym behandelt wird. Vgl. über स्त ausserdem noch NIA. 2,
25. 3, 4. 4, 19. 6, 22. 8, 6, 19. — 3, स्तेन in-tr. als adv. a) nach der Ord-
nung, gehörig, richtig; regelmässig, rite: स्तेनमृगामार्थं रोह वंश AV.
3, 12, 6. स्तेनं ये चमसोनिर्वयत 6, 47, 3. RV. 3, 31, 21. सुयुवकृति प्रति वा-
मूतेन 58, 2. उमे पुनामि रोदसी स्तेनं 1, 133, 1. (सोमः) स्तेनं देवान्कृते